जातक कथाओं में नारी : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. माधुरी वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग,
जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी. जी. कॉलेज,
बाराबंकी, (उ.प्र.)

सारांशिका

स्त्रियाँ धार्मिक, पतिव्रता, विदुषी, ललितकलाओं एवं गृहस्थी संचालन की कला मे निपुण होती थी। बुद्ध ने अनेक जगह स्त्रियों के पांडित्य की सराहना की है लेकिन इनकी संख्या को उंगलियों पर गिना जा सकता क्योंकि सबके लिए शिक्षा सुलभ नहीं थी, राजघरानों एवं उच्चघरानों की कन्याओं के लिए शिक्षा की व्यवस्था उनके घरों मे की जाती थी। भारतीय नारी हमेशा श्रद्धा का पात्र रही है या फिर उसने दासत्व को झेला है। एक मानव के रूप में उसकी भावनाओ एवं समवेदनाओं का कोई महत्व नहीं रहा है। नारी को श्रद्धा का पात्र बनाकर सदियों से शोषण ही किया जा रहा है, क्योंकि श्रद्धा का पात्र वह तभी तक है जब तक वह अपने परिवार एवं पति के चरणों मे सर्वस्व अर्पण करती रहती है, लेकिन इसकें लिए उसने कब कब अपनी इच्छाओं का गला घोंटा इसे कोई समझते हुए भी समझना नहीं चाहता। प्राचीन समय से अबतक यदि नारी की स्थिति का सूक्ष्मता से आँकलन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि सामाजिक व्यवस्था मे एक सामान्य नारी की जो स्थिति है उसमे बहुत अधिक परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ता है। यद्यपि महिला साक्षरता दर मे वृद्धि हुई है लगभग सभी क्षेत्रों मे नारी ने अपनी पहचान बनाई है, परिवार की आर्थिक स्थिति मे बराबर का योगदान कर रही हैं

मुख्य शब्दः जातक कथा, नारी, अध्ययन, बोधिसत्व, विश्लेषण

प्रस्तावना

विश्व की प्राचीनतम लिखित कथाएं जातक कथाएं है। इसमे लगभग 600 कहानियों का संग्रह है। इन कहानियों में मनोरंजन के माध्यम से नीति एवं धर्म को समझाया गया है। जातक का अर्थ, हो चुका है, या बीत गया है। जातक भगवान बुद्ध के जन्म के पूर्व जन्म की कथाएं हैं जब वह बोधिसत्व रहे थे। जातक बौद्ध साहित्य का प्राण है और इसमे पूर्ण रूप से बुद्ध जीवन चरित्र प्रतिबिंबित है। जातकों मे चित्रित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, कलात्मक,और भौगोलिक स्थिति के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि ये बुद्ध कालीन, बुद्ध के पूर्वकालीन,एवं बुद्ध के बाद के भारत का सामाजिक जीवन प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान मे प्राप्त अनेक जातकों की रचना ईशा पूर्व तीसरी शताब्दी मे हो चुकी होगी, क्योंकि सांची, भरहुत आदि ऐतिहासिक स्थानों मे पाषाणों पर जो उत्कीर्ण चित्र मिले हैं उन्मे जातकों के कथानकों और घटनाओं को भी अंकित किया गया है। कथा साहित्य के रूप मे तो जातक कथाएं महत्वपूर्ण हैं ही लेकिन बुद्धकालीन भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक स्थिति के ज्ञान मे भी ये अत्यंत उपयोगी हैं। इन जातकों में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सामग्री प्रचुर मात्रा मे बिखरी पड़ी है, जिनके आधार पर तत्कालीन सामाजिक दशाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जा सकता है।

किसी भी राष्ट्र, संस्कृति,एवं सभ्यता के निर्माण मे नारी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यहाँ ये देखना आवश्यक है कि जातक कथाओं एवं उसके समवर्ती काल में नारी की क्या स्थिति रही है,एक माँ, बहन, पुत्री, पत्नी,प्रेमिका एवं अन्य रूपों मे। इस संदर्भ मे यदि प्राचीन धर्मशास्त्रों की बात की जाए तो ये सर्वविदित है कि नारी को लेकर सदैव दो प्रकार की सोंच रही है, मनुस्मृति मे लिखा है कि, "जहां नारी की उपासना होती है वहाँ देवता निवास करते हैं "।[1] लेकिन दूसरे स्थान पर यह प्रतिबंध लगा दिया जाता है कि बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक वह किसी न किसी के संरक्षण मे रहेगी।' कुणाल जातक' (535) की गाथाओं मे नारी के प्रति बहुत ही असम्मानजनक कथन प्रस्तुत किये गए हैं ।वनमाला भावलकर हिन्दू साहित्य के आधार पर नारी के कलंकमय पक्ष को प्रस्तुत करते हुए लिखती हैं कि, "ऋग्वेद मे स्त्री की निंदा मे उसे दुर्बल चित्त वाली, अविश्वसनीय,अशासनीय, भेड़ियों के जैसे हृदय वाली और मैत्री के लिए अयोग्य बताया है"।[2] जातक कथाओं मे नारी के विभिन्न रूपों का यथा; बहन, पत्नी, माँ,मनोरंजन करने वाली आदि का चित्रण मिलता है। जो उनकी तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशा का ज्ञान प्रदान करते हैं ।कन्या का जन्म पुत्र की अपेक्षा घृणा की दृष्टि से देखा जाता था, वह पुत्र जैसा स्नेह नहीं पाती थी। लेकिन जिस परिवार मे पुत्र नहीं होता था वहाँ कन्या पुत्र से भी अधिक प्यार और स्नेह प्राप्त करती थी। 'महानारद कश्यप' जातक के अंग नामक राजा की अग्रमहिषी से उत्तपन्न केवल एक कन्या थी, अन्य रानियाँ संतानविहीन थीं राजा उसके लिए नाना प्रकार के पुष्पों के 25 टोकरे एवं सूक्ष्म वस्त्र प्रतिदिन भेजता था खाने पीने की कोई सीमा नहीं थी, प्रतिपक्ष दान देने के लिए एक हजार काषार्पण भेजता था। 'वृहदारण्यक उपनिषद' मे विदुषी एवं आयुष्यमती पुत्री प्राप्त करने के लिए घी में तिल एवं चावल पकाकर खाने की विधि कही गई है।[3] जातक कथाओं मे कन्याओं को शिक्षा देने की समुचित जानकारी तो नहीं प्राप्त होती है, लेकिन बहुत सी शिक्षित तरुण कन्याओं का उल्लेख अवश्य मिलता है। 'महाउम्मग्ग जातक' की रानी अप्सरा के सदृश्य सुंदर उदुम्बरा देवी लिखना पढ़ना अच्छी प्रकार से जानती थीं, तथा दूसरी नारी पात्र अमरा देवी बहुत ही व्यवहारकुशल एवं विदुषी नारी थी ।4 यद्यपि इनकी उच्चकोंटि की शिक्षा व्यवस्था के बारे मे कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती है। तक्षशिला जैसा विश्वविद्यालय केवल लड़कों की शिक्षा के लिए ही निश्चित था कन्याएं इसमे प्रवेश नहीं पा सकती थीं। उच्च घराने की कन्याएँ संगीत, नृत्य, चित्रकला तथा अन्य ललित कलाओं मे प्रवीण होती थीं। इन कलाओं मे प्रवीण होना नारी का सद्गुण माना जाता था।

जातकों मे कन्या का पिता कन्या का विवाह करके उसको पति के घर भेजना अपना धर्म मानता था, तथा चाहता था कि शुद्ध, पवित्र कन्या पति के घर जाए एवं बराबर वाले कुल व जाति मे मिले ।[5] ग्यारहवीं सदी के दिगम्बर जैन कवि सोमदेव सूरि ने नीतिवाक्यामृतं मे कहा है कि, "बारह वर्ष की लड़की एवं सोलह वर्ष का पुमान् (पुरुष) विवाह योग्य हो जाते हैं ।[6] महाभारत केअनुसार (अनुशासन पर्व–55/4–5) ऋतुमती हो जाने पर कन्या को अविवाहित रखने वाले पिता और बान्धु–बांधव मूर्ख हैं, तथा वे भ्रूण हत्या का पाप करते हैं। ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि कन्या रजोदर्शन के तीन माह बाद समान जाति वाले वर का चयन करने के लिए स्वतंत्र है। इससे स्पष्ट होता है कि कन्याओं को इच्छित वर के चयन की भी स्वतंत्रता थी,एवं स्त्री अपने से कम आयु के लड़के से भी विवाह करती थी। इसका उल्लेख महाभारत {वन पर्व–2/3/34–36} मे मिलता है जब देवसेना युवती थी तब उसके भावी पति का जन्म हुआ था।

नारी के जीवन का प्रमुख पक्ष उसका गृहस्थ जीवन मे पत्नी धर्म था। वैदिककालीन पत्नी के संदर्भ में पद्मिनी सेन गुप्ता ने लिखा है कि, " वैदिकयुगीन पत्नी घर मे उच्च स्थान रखती थी अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र थी तथा सामान्यतया एक पत्नी प्रथा थी"।[7] लेकिन बहुपत्नी प्रथा के भी प्रमाण पाए जाते हैं। । सुरुचिजातक मे सुरुचि कुमार ने केवल एक ही पत्नी सुमेधा से विवाह किया था। 'सूच्चज जातक' के अनुसार जो स्त्री दरिद्र पति के साथ दरिद्री बनकर रहती है, और धनी होने पर धनवान बनकर रहती है,वही शक्तिमान नारी ही उसकी श्रेष्ठ भार्या है ।[8] ऐसी नारी की पत्नी के रूप मे प्रशंसा करते हुए, "महावेस्सन्तर जातक' की गाथा मे कहा गया है कि, 'उस नारी की उपासना देवता भी करते हैं जो अपने पति की अनुगामिनी होती है"।[9] अंगतर निकाय (उग्गहसुत्त–पंचक निपात–4/3) मे गौतम बुद्ध कुमारियों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि, "माता–पिता जिस पति को सौंपे, उससे पहले सोकर उठने वाली, उसके पीछे सोने वाली, आज्ञा मे रहने वाली होगी , प्रिय बोलने वाली होगी"। 'संबुल जातक' (519) की पतिव्रता सुंदर पटरानी संबुला कहती हैं कि, "अन्नपान सुलभ कुल हो,नाना अलंकारों से अलंकृत अंगों से युक्त हो,यदि ऐसी नारी पति की अप्रिया हो तो, उसका मरना ही श्रेष्ठ है,लेकिन चाहे दरिद्र हो, दया की पात्र हो,निर्धन हो, काली कलूटी हो किन्तु पति की प्रिया हो वह सर्वांगीण सुंदर पति की अप्रिया से श्रेष्ठ है"। 'कुमार संभव' (सर्ग–5/1) मे कालिदास ने कहा है, "स्त्री की सुंदरता तभी सार्थक है जब वह अपने पति को प्रसन्न कर ले"। जातकों मे तो यहाँ तक कहा गया है कि जो नारी पतिव्रता एवं पवित्र कर्मों वाली होती है देवता स्वयं उसके दर्शन के लिए आते हैं। अंगुत्तर–निकाय (उग्गह सुत्त पंचक निपात 4/3) में निर्देशित किया गया है कि, धर्मपरायण नारियों को माता–पिता, ब्राह्मणों एवं अतिथियों का आदर सत्कार करने वाली होनी चाहिए तथा घर के सभी – चाकर उनके द्वारा कृत्य कार्यों की जानकारी रखते हुए, रोगियों की सेवा करनी चाहिये। अभिज्ञान शाकुंतलम् (चतुर्थ अंक–17) मे कण्व ऋषि ने शकुंतला की विदाई के समय ऐसे ही उपदेश दिए थे। इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था मे भी नारी का अस्तित्व एवं उसकी पहचान पति, पिता, बाँधवों से ही होती थी। आज के संदर्भ मे यदि हम देखें तो नारी की स्थिति मे बहुत ज्यादा अंतर नहीं दिखाई पड़ता है,महिलाओं द्वारा संपादित किये जाने वाले अधिकतर कार्य पुरुषों की सोंच से ही निर्धारित होते हैं इस संदर्भ मे रमणिक गुप्ता का कथन है कि, "विडंबना यह है की स्त्रियाँ पुरुष को अच्छी दिखने के लिए सजती – धजती हैं, अपनी खुशी के लिए नहीं, एक स्त्री अपने लिए क्यों सज–धज नहीं सकती ? वह अपनी नज़रों मे अपने को सुंदर देख सकती है वह अपनी नज़रों से खुद को परखे, जरूरत उस दृष्टि की है ।[10]

बुद्ध काल में तो महिलाओं की स्थिति और भी बद्तर हो गई थी। गौतम बुद्ध ने भी पुरुषों के पतन का कारण नारी को माना था, इसीलिए उन्होंने प्रारंभ मे नारी को संघ मे प्रवेश की आज्ञा नहीं दी थी। (चुल्लवग्ग–10/1/1) कुणाल जातक (536) मे नौ ऐसे कर्म बताए गए हैं जिसे दुष्ट नारियों की पहचान होती है, 'ये आराम गृहों मे जाने वाली होती हैं,उद्यानों मे जाने वाली होती हैं,नदी तट पर जाने वाली होती हैं, शीशे तथा दुशाले से अपनी सजावट करने वाली होती हैं, दूसरे कुलों मे जाने वाली होती हैं, शराब पीने वाली होती हैं, बाहर तांक–झांक करने वाली होती हैं तथा दरवाजे पर खड़ी रहने वाली होती हैं'। जातक साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उस समय सामान्यतया नारी को अविश्वास की दृष्टि से देखा जाता था ।अन्य जातक की गाथाओं मे भी (पंचम गा'114 से 118,पृ'367) कहा गया है कि, किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति को क्षुद्र, शीघ्र परिवर्तनशील, अकृतज्ञ, मित्र दोही, अग्निशिखा के समान सर्वभक्षी,तीक्ष्ण नदी के समान वेगवती, चिपकने वाली नारियों का विश्वास नहीं करना चाहिए। ये दुष्ट नारियां वानर के चित्त के समान,वृक्ष की छाया के समान ऊँचा–नीचा होने वाली, चक्र की नेमि की तरह चंचल चित्त वाली सर्प के फन के समान हैं जो चिरकाल तक साथ रहने वाले मन को प्रिय लगने वाले, अनुकंपा करने वाले, अपने प्राण प्रिय पुरुष का आपत्ति पड़ने पर साथ छोड़ देती हैं। ये कामुक नारियाँ नई घास की इच्छा रखने वाली गाय के समान होती हैं। इस प्रकार से जातकों मे दुश्चरित्र एवं कुलटा नारियों के अनेकानेक दृष्टांत मिलते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जातकों का उद्देश्य जान–बूझकर स्त्री जाति पर कीचड़ उछालना रहा है। लेकिन एक माँ के रूप मे नारी का बहुत सम्मान किया गया है। अपनी संतान के प्रति माँ का वात्सल्य एवं त्याग प्रत्येक युग एवं प्रत्येक समाज मे हमेशा से रहा है। 'मृगपक्ख जातक' के एक गाथा मे एक गूंगे बहरे, चेतनाविहीन बने हुए सोलह वर्ष के राजकुमार को जब राजकीय अधिकारी जंगल मे फेकने के लिए ले जा रहे थे उस समय उसकी माँ का हृदय फटा जा रहा था। सारथी के वपस लौटने पर माँ रोते हुए उससे पूंछती है "क्या वह गूंगा ही रहा ? क्या वह जड़ ही रहा ? अथवा गाड़े जाने के समय कुछ बोला ?"[11] महाभारत (शांतिपर्व,258/33) के अनुसार, पुत्र सशक्त हो या असशक्त, कमजोर हो या स्वस्थ माता निष्पक्ष रूप से उसका संरक्षण करती है। अर्जुन की प्रशंसा सुनकर माता कुंती के स्तनों मे दूध बहने लगा था। (आदिपर्व,125/13) निरूसंदेह यह माँ का अपनी संतान के प्रति अति प्रेम का द्योतक है। ऐसे ही चिरकाल के बाद व्यास को देखने के बाद उनकी माता सत्यवती के स्तनों से भी दूध बहने लगा था।

(आदिपर्व,99/23) लेकिन यह समर्पण अपनी कोख से उत्पन्न संतान के लिए ही होता है। जातक काल मे सती प्रथा का प्रचलन नहीं था। महाभारत मे भी विधवा नारी के परिपालन की जिम्मेदारी उसके पुत्र तथा भाई पर ठहराई गई है ।[12] विधवा नारियां कुटुंब में सास,जेठानी, देवरानी,बहु,पुत्र, जेठ,देवर आदि सभी का आदर एवं सम्मान पाती थीं। लेकिन फिर भी सामान्यतया व्यावहारिक रूप से विधवाओं का जीवन कष्टदाई ही था। जातकों से स्पष्ट होता है की विधवा विवाह सम्पन्न होते थे। नारी की सामाजिक स्थिति का एक अन्य पहलू तलाक था। जातकों मे ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां पुरुष एवं नारी दोनों ने एक दूसरे को छोड़ दिया। कौटिल्य (3.58.2) के अनुसार नारी को पति के चरित्रहीन, परदेशी, राजद्रोही, नपुंसक होने एवं उससे अपने प्राणों का भय होने की अवस्था मे तलाक देने का अधिकार है। अर्थशास्त्र (3.60.4) के अनुसार पुरुष भी विभिन्न अवस्थाओं मे नारी का परित्याग करने का अधिकार रखता था, जैसे जब नारी आठ वर्ष तक संतान उत्पन्न करने मे असमर्थ रही हो,मरी हुई संतान उत्पन्न होती हो तो दस साल, कन्याएं उत्पन्न होती हो तो बारह साल बाद नारी का परित्याग किया जा सकता है। मनुस्मृति (980–81) के अनुसार पुरुष मद्यपान करने वाली,दुराचारिणी, प्रतिकूल रहने वाली,कुष्ठ यक्ष्मा आदि रोगों वाली, हिंसक प्रवृति तथा धन का अपव्यय करने वाली नारी का परित्याग कर सकता है। लेकिन सामान्य रूप से परित्याग करना इतना आसान नहीं था ।

अनादि काल से पुरुष अपनी भोग प्रवृतियों के लिए वेश्या के रूप मे नारी का प्रयोग करता रहा है। जातकों मे गणिकाओं एवं वेश्याओं के अनेक उदाहरण प्राप्त हैं ये राजा एवं उच्चघराने के लोगों का मनोरंजन करती थीं। कला विलास के अनुसार, "ये चौसठ कलाओं मे दक्ष होती थीं" ।[13] "गणिका राजा के दरबार मे नियुक्त होती थी,राजा के मनोरंजन एवं सेवा का कार्य करती थीं, राजकीय सेवाओं के अतरिक्त स्वतंत्र रूप से मनोरंजन करने वाली नारियों को रूपजीवा कहा जाता था। रूपजीवा का प्रधान कर्तव्य नृत्य, नाट्य संगीत आदि के द्वारा लोगों का मनोरंजन करना होता था। यदपि वे भोगों के लिए अपने शरीर को उनको अर्पित किया करती थीं"।[14] गणिका अभाव किसी भी नगर प्रमुख के जीवन की महती कमी समझी जाति थी। जातकों मे चारित्रिक गुणों से सम्पन्न एवं दुराचरिणी दोनों प्रकार की गणिकाओं के उदाहरण मिलते हैं। सुंदर गणिकाओं के साथ रमण करने के लिए अपार धनराशि व्यय करनी पड़ती थी। कुछ गणिकाओं की फीस एक हजार का षार्पण प्रतिदिन थी। ये अपने श्रंगार एवं साज–सज्जा पर बहुत धनराशि खर्च करती थीं। अपार धन संपत्ति की स्वामिनी ये गणिकाएं ऐश्वर्यशाली,व विलासमय जीवन व्यतीत करती थीं, सुलसा, सामा,अम्बपाली आदि सभी समाज मे सम्मानजनक स्थान रखती थीं। यद्यपि सामान्य जनता के द्वारा ये घृणा की दृष्टि से देखी जाती थी।

परिवार की आर्थिक स्थिति एवं कृषि के विकास मे भी महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान का पता चलता है। घर की आर्थिक स्थिति को ठीक करने के लिए या विशिष्ट परिस्थितियों मे महिलायें श्रम एवं छोटे व्यापार संबंधी कार्य करती थीं। ग्रामों मे महिलायें खेतों पर अपने पति के साथ कार्य करती थीं। फेरी लगाकर वस्तुएं,फूल, शाक–सब्जी, फलों, जड़ी बूटियों आदि को बेचने वाली नारियों का उल्लेख जातकों मे मिलता है। निर्धन नारियां घरों मे नौकरानी, दासी, परिचारिका,नर्स आदि का भी कार्य करती थीं ।

नारी का त्याग बलिदान एवं पतिव्रत धर्म समाज का उज्ज्वल पक्ष रहा है। स्वयं गौतम बुद्ध ने भी एक जातक में स्त्री बुद्धि की प्रशंसा करते हुए कहा है कि "स्त्रियों में अनेक गुण हैं, संसार मे प्रथम उन्ही की उत्पत्ति हुई है, उन्ही में बीज अंकुरित होते हैं तथा उन्ही से प्राणी उत्पन्न होते हैं, अपने प्राण देकर भी उन्हे प्राप्त करने वाला कौन मनुष्य उनसे विरक्त है" ।लेकिन एक अवसर पर बुद्ध यह भी कहते हैं कि,–''एक तलवारधारी पुरुष से बात करना,एकांत में एक स्त्री से बात करने से श्रेयस्कर है।''[15] जातकों मे नारी के सभी पक्षों का अध्ययन करने के पश्चात स्पष्ट होता है कि समाज मे स्त्रियों को स्वतंत्रता एवं सम्मान प्राप्त था। राजघरानों एवं उच्चघरानों मे बहुविवाह का प्रचलन था, जिसके अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं,–महगोविंद ब्राह्मण की चालीस,[16] गहपति उग्ग की चार,[17] तथा रथपाल की कई पत्नियाँ थी।[18] लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि एक पत्नी विवाह नहीं होते थे। वैसे एक पत्नी विवाह का संबंध निर्धनता से भी था, लेकिन हर मामले उम इसे तर्क द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सकता है। बहुपत्नी विवाह के साथ पत्नियों को भी ये स्वतंत्रता थी कि वह पति का परित्याग करके पुनर्विवाह कर सकती हैं। गहपति उग्ग ने अपनी चारों पत्नियों से कहा था कि वे अपनी पसंद के व्यक्ति से विवाह कर सकती हैं। सबसे बड़ी पत्नी ने एक आदमी पसंद किया एवं उग्ग ने उसकी इच्छा पूरी की।[19] लेकिन सामान्यतया ऐसा कम ही होता था। बुद्ध,[20] सुदिन्न,[21] रथपाल,[22]आदि के भिक्षु बन जाने के बाद भी उनकी पत्नियाँ पति के घर पर ही रहीं। विधवाओं को भी पुनर्विवाह की छूट थी। नियोग की व्यवस्था भी विशेष परिस्थितियों मे हो सकती थी। समाज मे दुराचारिणी, कुलटा एवं व्यभिचारिणी स्त्रियों के अनेक उदाहरण मिलते हैं लेकिन इसके लिए सम्पूर्ण नारी जाति को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। स्त्रियाँ धार्मिक, पतिव्रता, विदुषी, ललितकलाओं एवं गृहस्थी संचालन की कला मे निपुण होती थी। बुद्ध ने अनेक जगह स्त्रियों के पांडित्य की सराहना की है लेकिन इनकी संख्या को उंगलियों पर गिना जा सकता क्योंकि सबके लिए शिक्षा सुलभ नहीं थी, राजघरानों एवं उच्चघरानों की कन्याओं के लिए शिक्षा की व्यवस्था उनके घरों मे की जाती थी। भारतीय नारी हमेशा श्रद्धा का पात्र रही है या फिर उसने दासत्व को झेला है। एक मानव के रूप में उसकी भावनाओ एवं समवेदनाओं का कोई महत्व नहीं रहा है। नारी को श्रद्धा का पात्र बनाकर सदियों से शोषण ही किया जा रहा है, क्योंकि श्रद्धा का पात्र वह तभी तक है जब तक वह अपने परिवार एवं पति के चरणों मे सर्वस्व अर्पण करती रहती है, लेकिन इसकें लिए उसने कब कब अपनी इच्छाओं का गला घोंटा इसे कोई समझते हुए भी समझना नहीं चाहता। प्राचीन समय से अब तक यदि नारी की स्थिति का सूक्ष्मता से आँकलन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि सामाजिक व्यवस्था मे एक सामान्य नारी की जो स्थिति है उसमे बहुत अधिक परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ता है। यद्यपि महिला साक्षरता दर मे वृद्धि हुई है लगभग सभी क्षेत्रों मे नारी ने अपनी पहचान बनाई है, परिवार की आर्थिक स्थिति मे बराबर का योगदान कर रही हैं बावजूद इसके

क्या एक आम महिला को उसके घर, परिवार, समाज मे उसके द्वारा किये जा रहे योगदान को पुरुषों के समकक्ष आँका जा रहा है ? आज भी स्वार्थी लोग केवल उसी महिला को नारी को पतिव्रता और देवी का दर्जा देकर श्रद्धा का पत्र बनाते हैं जो अपनी समस्त इच्छाओं का त्याग करते हुए रातदिन कठपुतली की भांति उनके इशारों पर नाचते हुए उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। अन्यथा नारी को कुलटा एवं दुराचारिणी कहने में इन्हें न तो तनिक भी समय लगता है एवं न ही संकोच होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मनुस्मृति,3 / 56 महाभारत अनु.पर्व,81 / 5–6
2. वनमाला भावलकर, 'महाभारत में नारी' पृ.14
3. चंद्रबली त्रिपाठी, 'भारतीय समाज मे नारी आदर्शों का विकास' पृ30
4. जातक षष्ठ दृ पृ. 348, 365–66
5. जातक प्रथम पृ. 411
6. नीतिवाकयअमृतं, पृ. 196
7. 'पद्मिनीसेन गुप्ता, एवरीडे लाइफ इन एनसिएन्ट इंडिया'।
8. जातक तृतीय, गा. 80 पृ. 70
9. जातक षष्ठ, गा. 1876 पृ. 508
10. युद्धरत आम आदमी, अंक 98, अप्रैल–जून, 2009, पृ. 4
11. जातक षष्ठ, गा. 50–55 पृ. 19
12. महाभारत, 'वन पर्व', 277 / 35,'अनुशासन पर्व', 151 / 119
13. क्षेमेन्द्र, कला विलास, चतुर्थ 2 / 11
14. सत्यकेतु विद्यालंकार, "मौर्यकालीन साम्राज्य का इतिहास", पृ. 399–401
15. अंगउत्तरनिकाय, प्प, पृष्ठ–69 / 49
16. दीघनिकाय, प, पृष्ठ–239, 245 / 51
17. अंगउत्तरनिकाय, प्ट, पृष्ठ –210
18. मजिझमनिकाय, प, पृष्ठ –64 / 53
19. अंगउत्तरनिकाय, प्ट, पृष्ठ –210 / 63
20. विनयपिटक, प्प, पृष्ठ –82 / 68
21. विनयपिटक, प्प, पृष्ठ –17 / 69
22. मजिझमनिकाय, प, पृष्ठ –64